वर्ष 12, अंक 40, जनवरी -मार्च 2022

मूल्य ₹120/-

UGC Care Listed

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

125

नागफनी

A Peer Reviewed Referred Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

ISSN-2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 12, अंक 40, जनवरी - मार्च 2022

संपादक
सपना सोनकर

सह-संपादक
रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. एन. पी. प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

अतिथि संपादक
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर किशोरी लाल रैगर, जोधपुर (राजस्थान)
प्रोफेसर आर.जयचंद्रन तिरूअनंतपुरम (केरल)
डॉ. एन. एस. परमार, बड़ोदा (गुजरात)
डॉ. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी. नगर (गुजरात)
प्रोफेसर विजय कुमार रोड़े, पुणे (महाराष्ट्र)
प्रोफेसर संजय एल. मादार, धारवाड (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. दादासाहेब सालुंके, औरंगाबाद(महाराष्ट्र)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ. बलविंदर कौर, हैदराबाद (तेलंगाना)
डॉ.उमाकांत हजारिका,शिवसागर (असम)

मुख पृष्ठ- डॉ.शेख आजम, मैत्री ग्राफिक्स, सावंगी (ह), औरंगाबाद

प्रकाशन/मद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन. पी. प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा
नमन प्रकाशन 423/A अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य

संपादकीय / व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू काटेज स्प्रिंग रोड, मसूरी-248179, उत्तराखण्ड दूरभाष: 0135-6457809 मो. 09410778718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी.आर-62 ए, ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म.प्र. 486886, मो. 097529964467
सहयोग राशि-150/- रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1000, रुपये पंचवार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-2000/- रुपये
पंचवार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए 3000/- रूपये, विदेशों में $50 आजीवन व्यक्ति 6000/- रुपये 10000/- रुपये

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक AC8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001,Branch -SIDHI(NIRAT Prasad Prajapati)

ोट:- पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक - संचालक पूर्णतय: अवैतनिक एवं अध्यावसायिक है। **नागफनी'** में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके ्वंय के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। **"नागफनी"** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे ुगतान मनीआर्ड बैंक/चेक/ बैंक ट्रांसफर /ई-पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/- अतिरिक्त जोड़ दें।

लेख भेजने के लिए Mail ID: nagfani81@gmail.com Website: http:naagfani.com

नागफनी

पृष्ठ क्रमांक

संपादकीय..... 01

साहित्यिक विमर्श

1. कन्नड भाषा और साहित्य का सांस्कृतिक संदर्भ-प्रो.संजय एल.मादार 2-4
2. मध्यकालीन हिन्दी काव्य : राम और कृष्ण के शब्द चित्रों के संदर्भ में-डॉ.नीतू परिहार 5-6
3. उदय प्रकाश की कहानियों में उदारीकरण की संस्कृति-डॉ.सुनील पाटिल 7-8
4. साहित्य के मानदण्ड एवं प्रेमचंद के निबंध-डॉ.अमित कुमार तिवारी 9-11
5. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरः-डॉ.संगिता चित्रकोटी 12-14
6. अज्ञेय की काव्य संवेदना : एक अन्तर्यात्रा-डॉ.वीणा जे 15-17
7. 'राम की शक्तिपूजा' मनोभावों की समग्रता का प्रबल साक्ष्य-त्रिनेत्र तिवारी 17-18
8. विष्णु प्रभाकर के स्वागत नाट्य (मोनो लॉग) का शिल्पगत अध्ययनः डॉ.कल्पना मौर्य 19-20
9. प्रेमचंद और आज का भारतः किसान विमर्श के संदर्भ में- वैशाली गायकवाड 21-22
10. निराला और उनकी राष्ट्रीय चेतनाः डॉ.समयलाल प्रजापति/डॉ.निरपत प्रसाद प्रजापति 23-24
11. 'सुख' तलाशते साठोत्तर समाज का 'दुख'-डॉ.दीपक जाधव 25-27
12. भारतीय अन्नदाता की त्रासदी का उपन्यास 'अकाल में उत्सव'-डॉ.मृत्युंजय कोईरी 27-29
13. हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श : यथार्थवादी चिंतन -डॉ.सुरेश सिंह राठौड 30-32
14. मुक्तिबोध और फैन्टेसी : 'अंधेरे में' कविता के संदर्भ में- आरती सिंह राठौर/डॉ.रेशमा अंसारी 33-34
15. रस का आधुनिक काव्य से संबंध - डॉ.कविता त्यागी 35-36
16. जयप्रकाश कर्दम के कथा साहित्य में लोकजीवन-सुनीता 37-38
17. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में सांस्कृतिक चिंतन के द्वारा राष्ट्रीय चेतना-श्रीमती मीना शर्मा 39-40
18. साहित्य से सिनेमा फिल्मांकन की समस्या पर विमर्श (हिन्दी सिनेमा के संदर्भ में)-संजय सिंह/डॉ.शाह आलम 41-43
19. 'नए इलाके में': नए इलाके की खोज करती कविताएँ-डॉ.अन्सा ए 44-46
20. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी की हास्य व्यंग्य कविता : डॉ.उर्विजा शर्मा 47-48
21. हिंदी साहित्य में विकलांगता का चित्रण-मोनी 49-52
22. निराला का अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह-डॉ.कृष्ण बिहारी राय 53-54
23. इक्कीसवीं सदी के प्रतिनिधि उपन्यासों में राजनीतिक मूल्य-श्रीमती मालती देवी 55-57
24. 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' : पर्यावरण चिंतन का महाकाव्य-डॉ.अंजू लता/आलिया जेसमिना 58-62
25. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में उत्पीडन एवं जीवन संघर्ष -डॉ.कुलदीप सिंह मीना 63-65
26. ढाई बीघा जमीन : आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में-डॉ.जयंत बोबडे 66-68

स्त्री विमर्श

1. इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री अस्मितामूलक प्रश्नों की संवेदना-डॉ.बलविंदर कौर 69-71
2. नारी अस्मिता के विविध आयाम-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य-डॉ.नीरजा शर्मा 72-73
3. नारी अस्मिता और छिन्नमस्ता उपन्यास-प्रोफेसर आसाराम बेवले 74-76
4. स्त्री लेखन का नया प्रतिमानः स्त्री-भाषा-डॉ.यमुना प्रसाद रतूडी 77-79
5. 'रेत' उपन्यास में चित्रित स्त्री-डॉ. शीतल गायकवाड 80-81
6. कृष्णा अग्निहोत्री की 'और...और...औरत' आत्मकथा में नारी विमर्श-राकेश भील 82-83
7. स्त्री विमर्श के दायरे में 'बारबाला' का अनुशीलन-डॉ.मीना सुतवणी 83-86
8. नन्द चतुर्वेदी की कविता में स्त्री चित्रण-डॉ.विदुषी आमेटा/संगीता भारद्वाज 87-93
9. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण स्त्री जीवन का परिदृश्य :'बेनीमाधो तिवारी की पतोह'के विशेष संदर्भ में- बेबी विश्वकर्मा 94-96
10. वर्तमान समय में नारी की स्थिति-डॉ.पूजा शर्मा 97-98
11. अनामिका की कविता में स्त्री पक्षधरता-डॉ.उषस पी.एस. 99-101
12. 'थेरीगाथा' में चित्रित स्त्री-जीवन की वैयक्तिक समस्याएँ- संजय यादव 101-102
13. शिवमूर्ति की कहानियों में स्त्री स्वर की अभिव्यक्ति-चंद्रावती 103-105
14. भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'वंचना'में व्यक्त नारी विचार-परेश सननसे/संजय कुमार शर्मा 106-107

पृष्ठ क्रमांक

आदिवासी विमर्श

1. आजादी की ईबारत 'जननायक टंट्या भील-डॉ.जगत सिंह मण्डलोई 108-111
2. मराठी आदिवासी काव्य में स्त्री जीवन- डॉ.संतोष गिरहे 112-113
3. हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी जीवन प्रथाएँ- डॉ.राजेंद्र घोडे 114-115
4. आदिवासी विमर्श-रोहिणी सालवे 116-117
5. जनजातियों की सामाजिक अवधारणा और रीति-रिवाज-शीतल कुमार चौके 117-119
6. आदिवासी समाज और उसका हिंदी कविता से अंतर्संबंध-वेद प्रकाश सिंह 119-122
7. आदिवासी समाज के विविध रंग एवं हिंदी कहानी- रत्नेश कुमार 123-125

विविध विमर्श

1.भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा और साहित्य :पाठ्यक्रम के विशेष संदर्भ में - प्रोफेसर बळीराम धापसे 126-127
2.सामाजिक विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम में उत्पन्न शिक्षकों की समस्याएँ एवं उनके कारण-महेश कुमार शर्मा 128-130
3. वैश्विक धरातल पर आतंकवादः मानवता के समक्ष एक गम्भीर चुनौती- डॉ.राजू पवार 130-132
4. आधुनिक भारत में किसान आंदोलन का ऐतिहासिक अध्ययन-डॉ.अंजू पाण्डे 133-137
5. इक्कीसवीं सदी में गांधी की बुनियादी शिक्षा दर्शन की उपादेयता-डॉ.मृदुला शर्मा 138-140
6. माध्यमिक स्तर पर सांस्कृतिक दृष्टि से स्वदेशी और पाश्चात्य पाठ्यक्रम का अध्ययन-डॉ.रामावतार 141-143
7. समाज और संस्कृति का अंतःसंबंध-डॉ.मीना 144-148
8. हाशिये के सामाजिक परिवर्तन के लिए दूरस्थ शिक्षा-डॉ.अमित राय 149-151
9. हिन्दी पत्रकारिताः एक चुनौती-डॉ.साधना 152-153
10.कन्नड और हिंदी अनुवादः एक विश्लेषण -डॉ.रेशमा एल.नदाफ 154-158
11. देशज व्यक्तियों के अधिकार और विस्थापन-डॉ.चित्रा माली 159-161
12. मीडिया का चेहरा और चरित्र-डॉ.शीतल प्रसाद महेन्द्रा 162-166
13. अध्यापकों की जीवन संतुष्टि का विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता पर पडने वाला प्रभाव -डॉ.सुनीता यादव 167-168
14.समाज पर सामाजिक माध्यमों का प्रभाव-आर.अरुणा/डॉ.जी.शांति 169-171
15.वैदिक वाङ्मय और सामाजिक चेतना- डॉ.कनक रानी 172-174
16.गांधी और विनोबा के अर्थशास्त्र में खादी- डॉ.मोहम्मद तारिक 175-176
17.सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षणिक निष्पत्ति का अध्ययन-डॉ.कैलाश पारीक 177-179
18.विंध्य क्षेत्र के बौद्ध स्थापत्य (देउर कोठार स्तूप समूह के विशेष संदर्भ में)-डॉ.गोविंद बाथम 180-181
19.भौगोलिक वातावरण का कृषि एवं जैव विविधता पर प्रभावः- गजेन्द्र सिंह राठौड/ डॉ.सुनील कुमार 182-185
20. शिक्षक-प्रशिक्षकों में उभरती व्यावसायिक अनिश्चितता का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव-मंजु यादव/प्रो.मनीषा वर्मा 186-188
21.चार वर्षीय एवं द्विवर्षीय बी.एड प्रशिक्षण प्राप्त नवनियुक्त शिक्षकों की शिक्षण प्रतिबद्धता-मुनेश यादव/प्रो.मनीषा वर्मा 189-193
22.आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षणिक समस्याओं का निदान एवं उपचार-मुकेश बाला/ प्रो.मनीषा वर्मा 194-196

किन्नर विमर्श

1.समकालीन कहानियों में अभिव्यक्त किन्नर जीवन- डॉ.शबाना हबीब 197-198
2. इक्कीसवीं सदी के प्रमुख उपन्यासों में किन्नरों की स्थिति- डॉ.पी.सरस्वती 199-201
3. समाज के अभागों (किन्नर) का दर्द- डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला 202-205
4. कुसुमलता मलिक की कहानियों में दिव्यांग विमर्शः अनिता देवी 205-207
5. किन्नर जीवन का सच्चा यथार्थ 'दुनियाँ जीत ली' कहानी के विशेष संदर्भ में- सनोज पी.आर 208-209
6. किन्नरों का इतिहास एवं मिथकः भारतीय साहित्य के विशेष संदर्भ में-प्रियंका कलिता 210-212
7. हिन्दी उपन्यासों में तृतीय प्रकृति की अस्मिता-डॉ.निम्मी ए.ए. 213-216

पृष्ठ क्रमांक

दलित विमर्श

1. नागफनी-सामाजिक क्रांति का दस्तावेज-डॉ.अभय परमार 217-221
2. गूँगा नहीं था मैं (कविता संग्रह) में अभिव्यक्त दलित चेतना- डॉ.जी.वी.रत्नाकर 221-223
3. बाजारवाद के आइने में 'सुअरदान' उपन्यास का विश्लेषण-डॉ.अजय कुमार 223-224
4. दलित कविता का सौन्दर्यबोध- डॉ.विशेष कुमार राय 225-227
5. आत्मकथात्मक कृति 'जूठन' में दलित व्यथा का चित्रण-डॉ.उदय भान भगत 228-230
6. समकालीन हिंदी काव्य में दलित समस्याओं का निरुपण-सूर्य प्रकाश 231-234
7. मानवता और परिवर्तन की सशक्त अभिव्यक्ति-'सूअरदान'-डॉ.गायत्री देवी जे.लालवानी 235-237
8. सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित नारी-डॉ.पारुल सिंह 237-240
9. कथ्य और शिल्प की नवीनता का उपन्यासः 'डंक'- डॉ.हेना 241-242
10. नागफनीः दलित प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज-जितेन्द्र विसारिया 243-247
11. वर्चस्ववादी मानसिकता और दलित साहित्य- डॉ.विलास साळुंके 248-251
12.डॉ.आंबेडकर : पुलिस, जासूस और अखबार की नजर से-डॉ.अनिरुद्ध कुमार 252-253
13. तथागत गौतम बुद्ध के वर्ण और जाति व्यवस्था पर विचार-डॉ.धर्मराज पवार/डॉ.अंबादास बाकरे 254-256
14. दलित और आदिवासी साहित्य-विमर्शः एक तुलना-डॉ.सुषमा कुमारी 257-259
15.दलित चेतना और सुशीला टाकभौरे की कविता में नारी-ऊषा यादव 259-262
16.भारत विभाजन की त्रासदी एवं दलित विमर्श -सुकांत सुमन 263-267

English Discourse

1.An Ethnographic Introduction To The Nat : A Denotified Scheduled Castes of Chhattisgarh -Hemant Kumar 268-271

2.Complexity of Identity in August Wilson's *Radio Golf*-A.muthukumar/ Dr.v.anbarasI 272-275

3. Cultural Identity and Exploration of Multicultural-identity of Indo-Malaysians revealed in K.S.Maniam's *The Return*-A.Athiappan/ Dr.T.Gangadharan 276-279

4.Ecofeminism in India with special reference to Chipko Movement-aoyana Buragohain/Pallav Protim Mahanta 280-282

5.An Analytical Study on Autonomy Movement in Assam and Its Relevance- Golap Borah 283-286

6.Buranji Literature: A repository of history of medieval Assam-Monjit Gogoi/ Bismita Bora 287-289

7. Contributions of the Emerging Women Leadership in the Panchayati Raj Institutions(PRIs) towards Society: An Evaluative Analysis-Dr. Jayanta Baruah 290-293

8. Challenging Stereotypes:Altering the Stereotype of Dependent Woman in the Fictional works of Indian Women Novelists-Sonawane Tejal Mark 294-296

09. Locating the Supernatural in Contemporary Naga Society: A Reading of Select Short Stories of Avinuo Kire- Dr Breez Mohan Hazarika, 297-299

10. Understanding Jyotiba Phule as the Critic of Colonial Government and Indian Socio political Order-Dr. Umakanta Hazarika/ Dr. Shahiuz Zaman Ahmed 300-302

11. Education, Dalit Activism and Caste Politics in Akhila Naik's Bheda-Saraswathi G/ Dr. K. Suganthi 303-306

12. Ethnic Contestation And Conflicts In the Assam's Hill District of Dimahasao: A Case of Challenge to Peaceful Co-Existence -Dr. Lamkholal Doungel 307-311

13. A Study On Attitude Of Parents Towards Higher Education Of Girls Among Bhojpuri Community In Khowang Block, Dibrugarh District-Punam Koiri 312-322

Page No:

14.Impact of Lockdown on Digital Marketing Tools During Covid-19 in selected Business-Sidhant Kumar/Saurabh Sonkar/Ashoke Kumar Sarkar 323-329
15.Illusion Of Human Interdependence In Vikram Seth's A Suitable Boy-J. Ambika/J. Dharageswari 330-333
16.Role Of Commercial Banks In Lending To Priority Sector With Customers Perspective In Krishnagiri District – Tamilnadu.-Mrs.K.usha 334-336
17.Reviewing the Emergence and Problematics of Dalit Literature in India-Dr. Anil Kumar 337-344
18.Cultural Confrontation In Ruth Prawer Jhabvala's Novelss-Aranya Devi. P/Dr. Keerthi G 345-348
19.SOM: An Institute of Social and Cultural values of the Kuki Youths in Traditional society - Dr. Paochon Tuboi 349-353
20.Scrutinizing The Influence Of Myth In Domesticity: A Study Of Shashi Deshpande's Novels-T.vijaya / Dr.J. DharageswarI, 354-357
21.The problem of meaning of Social action: Max Weber and Talcott Parsons-Dr.Premala anil Kumar 358-364
22.The Problematics of Individualism in a Collective Family: A Study of the Protagonist of the Novel Inga -Chitra Pegu 365-368
23.Training -Need for the employee's performance & development -A study of the Private sector banks of Uttarakhand-Dr. Reenu RaniMishra 369-3742
24.Prospects Of Ethnic Tourism In Namphake Village, Dibrugarh District, Assam- Dr. Beejata Das 375-380
25.Manjhi: The Mountain Man: A Biopic of Dalit Agency-Jai Shri Jain 381-386
26.Rights of Refugees and Humanitarian obligation of world at large- Kolte Dinesh B. 387-392

मध्यकालीन हिन्दी काव्य : राम और कृष्ण के शब्द चित्रों के संदर्भ में

-डॉ.नीतू परिहार
सह आचार्या,विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग,मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर मो.-9913864055

चित्रों का रंग और रेखाओं से घनिष्ठ संबंध है। चित्रकार अपने मन के भावों को रेखाओं और रंगों से मूर्त्त करता है। उसकी आड़ी–तिरछी खीचीं रेखाएँ उसके मन के, अन्तर्मन के भावों को अभिव्यक्त कर देती हैं। उसके बनाए चित्र उसकी कल्पनाओं को साकार कर देते हैं।

ठीक इसी प्रकार लेखक अपने भावों को शब्दों के चित्र खींच कर स्पष्ट करता है। कवि मन अपनी बात को, विचार को, चित्रांकित करता है। साहित्य में हम देखते हैं कवि प्रारम्भ से ही अपने भावों को अभिव्यक्त करता रहा है।

कवि ने जब कभी किसी प्रेमिका को अपने उत्कंठित, आतुर प्रेमी को सबके सामने बुलाने का प्रयास करते देखा होगा तो यह शब्द–चित्र उनके मानस में साकार हुआ–

''कहत,नटत,रीझत,खीझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन ही सू बात।।'[1]

हिंदी साहित्य की बात करे तो यहाँ तो एक से एक ऐसे कवि है जिन्होंने अपने काव्य में शब्द–चित्र उकेरे है। इस आलेख में विभिन्न कवियों द्वारा राम और कृष्ण के जो शब्द–चित्र प्रस्तुत किए उनका अवलोकन कर रही हूँ।

तुलसीदास जी ने श्रीराम के बालस्वरूप का जैसा सजीव चित्रण किया वैसा हिंदी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। कवितावली के बालकाण्ड में दशरथ गोद में लिए बालक राम को खिला रहे हैं और उसी समय कोई अवध की महिला महल में जाती है। इस दृश्य को वो अपनी सखी से कहती है तो उसके शब्दों से पूरा दृश्य साकार हो जाता है–'

अवधेस के द्वारे सकारे गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे।'[2]

वह राम के सौंदर्य को देख कर ठिठक गई। इसी तरह तुलसी ने बालक राम के हठ करने, अपनी परछाई से डरने, ताली बजाकर नाचने का ऐसा सुंदर चित्र बनाया है कि हम उसका मानसिक साक्षात्कार करते हैं–

'कबहूँ ससि मांगत आरि करै, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं।
कबहूँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु, सबै मन मोद भरैं।।'[3]

तुलसी ने ऐसे अनेक चित्र अपने काव्य में रचे हैं जिनको पढ़ कर हम अपने मानस में उन चित्रों को सहज उभरता हुआ देखते हैं। राम जी को जब वनवास दिया गया और बहुत मना करने पर भी सीता जी नहीं मानती, रामजी के साथ जिद्द कर वनवास के लिए प्रस्थान करती हैं, पर धूप में चलने का अभ्यास सीता जी को कहाँ था। कहाँ उस नाजों से पली सीता ने पहले कभी ऐसा श्रम किया था। थोड़ा ही चलने से उनके चेहरे पर पसीने की बूंदे झलक पड़ी, होठ सूख गये। बड़ी अधीरता से उन्होंने राम से पूछा–''कितना और चलना है? पर्णकुटी कहाँ बनाएगे?''

कैसा कष्टपूर्ण है ये देखना कि जिस पत्नी को संसार के सारे सुख देने का वादा कर लाया हो और पहले ही दिन उसे वनवास जाना पड़े। कैसी पीड़ा है? कैसी विडम्बना? राम जी की आँखे भर आई। सीता जी की अधीरता, उनकी बैचेनी, उनकी पीड़ा को देख कर, इस घटना का वर्णन तुलसी के शब्दों में देखे–

'पुरते निकसी रघुवीर–वधू, धरि धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुरा धर वै।
फिरि बूझति हैं,'चलनों अब केतिक' पर्नकुटि करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की आंखियाँ अति चारू चली जल च्वै।।'[4]

इसी तरह जब वन जाते समय बीच में आने वाले गाँव से निकलते समय गाँव की स्त्रियाँ सीता जी से पूछती हैं कि ये साथ चलने वाले सांवले तुम्हारे कौन हैं, तो सीता जी भी बड़ी चतुराई से आँखों के इशारे से कुछ समझा कर मुस्कराकर कर चल देती हैं।

'सुनि सुन्दर बैन सुधारस–साने सयानी हैं जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन दै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसुकाइ चली।।'[5]

तुलसी ने जिस तरह राम का वर्णन किया है उसी तरह कृष्ण के रूप सौन्दर्य, उनके मनोरंजक रूप का वर्णन भी मध्यकाल में कई कवियों ने किया है। जिनमें सूरदास, रसखान, नरोत्तमदास, और मीरा मुख्य है।

यद्यपि सूर आंखों से नहीं देख सकते थे, किंतु उन्होने अपनी मन की आंखों से कृष्ण के ऐसे सुन्दर, मनमोहक चित्र खींचे हैं जो लोक मानस के ह्रदय पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं। सूर का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। रामचंद्र

शुक्ल जी ने तो कहा ही है– "सूर वात्सल्य का कोना–कोना झांक आए हैं।"[6]

कृष्ण के बालरूप वर्णन में सूर बेजोड़ है। उन्होंने माँ यशोदा का कृष्ण को पालने में झूलाने, लोरी गा के झुलाने का जो वर्णन किया है वह अद्‌भुत है। वे लिखते हैं–

"यशोदा हरि पालनै झुलावै
हलरावे दुलरावे, मल्हावै, जोई सोई कुछ गावै।।
कबहुं पलक हरि मूंदि लेत हैं, अधर कबहुं फरकावै।
सोवत जानि मौन ह्वै बैठी, करि करि–सैन बतावै।"[7]

इन पंक्तियों को जब पढते है तो सहज ही पालने में झूलाते माँ का चित्र उभर आता है। बच्चे की नींद ना टूट जाए इसलिए माँ घर के सभी सदस्यों को चुप करवाती है। मैनें ही क्या इस दृश्य को तो आप सभी ने भी अपने जीवन में अवश्य ही देखा होगा। सूरदास का एक और पद है जिसमें वे बाल कृष्ण के चंद खिलौना लेने के हठ को चित्रित करते हैं–

"मैया मै चंद खिलौना लै हौं
जैहौं लोटि धरनि पर अब ही,' तेरी गोद न ऐहौ।।"[8]

बच्चे सदा ही हठ करते हैं, उनको कोई वस्तु न दी जाए तो वे बिना सोचे–समझे धरती पर लोट जाएंगे, पैर पटक–पटक कर रोऐगे। किंतु सूरदास ने इस बिम्ब का ऐसा सजीव शब्द चित्र बनाया है कि पढ़ने वालों पाठक को मानसी साक्षात्कार हो जाता है।

सूर की ही तरह कृष्ण के बाल रूप का बहुत सुंदर चित्रण रसखान ने भी किया है जिसमें कृष्ण धूल से भरे हैं, उनकी सुंदर चोटी बनी है। घर के आंगन में खेल रहे है, हाथ में माखन लगी रोटी है, इतने में ही कोई कौआ उनके हाथ से रोटी छिन ले जाता है–

"धूरि भरे अति सोभित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरै अंगना, पग पैंजनिया कटि–पीरी कछौटी।
व छवि को 'रसखानि' बिलोकत, बारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सौं लै गयों माखन रोटी।।"[9]

नरोत्तम स्वामी के सुदामा–कृष्ण के उस शब्द चित्र को कैसे भूला जा सकता है, जो मित्रता का प्रतीक बन गया। सुदामा अपनी पत्नी के कहने पर कृष्ण से मिलने जाते हैं। मार्ग की धूल, पथरीली राह और कटीले कांटे सुदामा के पैरों को लहूलुहान कर देते हैं। कृष्ण को जैसे ही संदेश मिलता है कि उनके मित्र सुदामा आये हैं, वे दौड़ पड़ते हैं उनके स्वागत में, किन्तु अपने मित्र की दीन–दशा देखकर कृष्ण के नेत्रों से अश्रु–धारा बह जाती है। सुदामा के पैरो को धोने के लिए परात मे जो जल मंगवाया था वह तो कृष्ण छुते भी नही अपने आंसुओं से ही सुदामा के पैर धो देते हैं। कितना सजीव चित्र है, बरसो हो गये इसकी रचना हुए किन्तु आज भी पढ़े तो यह मानस मे सचित्र उभरता है। पद देखिए–

"ऐसे बेहाल बेवाइन सों पग कंटक चाल लगे पुनि जोयै
हाय महादुख पायो सखा तुम आये इतै न किते दिने खोये,
देखी सुदामा की दीन दसा करुणा करके करुणानिधि रोये
पानी परात को हाथ छुयो नही नैनन के जल सौ पग धोये।"[10]

मीरा के काव्य में भी अनेक शब्द चित्र ऐसे है, जिनमें साक्षात कृष्ण की छवि को देख सकते है। मीरा जब कृष्ण की साँवली सुरत उनकी मोहनी मुरत को देखती है तो उनके इसी रूप को अपनी आँखो में बसा लेना चाहती है। जब इस पद को हम पढते है तो मुरली बजाते कृष्ण का रूप हमारी आँखो में भी साकार हो जाता हैं। वह कहती है कि–

"बसो मोरे नैनन मे नन्दलाल
मोहनी मुरती साँवरी सुरती, नैणा बने बिसाल
अधर सुधारस मुरली राजती उर बैजंती माला।"[11]

इस प्रकार हम देखते हैं हिन्दी–साहित्य में ऐसे अनेक शब्द चित्र हैं जो कवि के मनोभावो को पाठक के मानस में साक्षात् चित्रित कर देते हैं। यहाँ तो कुछ प्रसिद्ध शब्द–चित्रों का वर्णन किया गया है, जिसे चित्रकला प्रेमियों ने कलाकारों ने कई बार अपने कैनवास पर उतारा हैं। ये शब्द–चित्र हिन्दी साहित्य और चित्रकला की अमूल्य निधि है। आज भी इसके महत्त्व को कम नहीं आंका जा सकता।

संदर्भ :

1. बिहारी प्रकाश– सं. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 114
2. कवितावली बालकांड– सं. सुधाकर पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.सं.1
3 वही पृ.सं. 2
4. कवितावली अयोध्याकांड– सं. सुधाकर पांण्डेय,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृ.सं.22
5. वही पृ.सं. 29
6. हिंदी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, नवीनतम संस्मरण
7. भक्ति काव्य सरिता–सं. श्यामसुंदर दास, सूरदास पृ.सं. 24–25
8. वही पृ.सं. 25
9. भक्ति काव्य सरिता– सं. श्यामसुंदर दास, रसखान, 46
10.सुदामा चरित– श्री नरोतम दास ठाकुर, पृण सं. 43
11. भक्ति काव्य सरिता–सं. श्यामसुंदर दास, मीरा पृ.सं. 68